राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–pr.rajbhavan@gmail.com
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का संरक्षण एवं संवर्द्धन नितान्त आवश्यक–राज्यपाल

पटना, 07 जुलाई 2019

''भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का संरक्षण एवं संवर्द्धन नितांत आवश्यक है। भारतीय संस्कृति सदैव विश्वबंधुत्व में विश्वास करती रही है एवं इसमें विभिन्न तरह की विचारधाराओं, चिन्तन, दृष्टियों, दर्शन, परम्पराओं, रीतियों–नीतियों आदि का सम्मिलन होता रहा है। संस्कृत भाषा भी भारतीय चिन्तन और दर्शन के बहुमूल्य ज्ञान का संचित कोष रही है।'' –उक्त विचार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने राजभवन स्थित राजेन्द्र मंडप में आज आयोजित 'राष्ट्रिय शास्त्रार्थ सभा' का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये।

राज्यपाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में बराबर परस्पर विरोधी विचार–धाराओं को भी पर्याप्त सम्मान मिला है। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में तलवारों, तोपों और रक्तपात के बल पर परिवर्तन घटित नहीं हुए हैं, बल्कि यहाँ परिवर्तन के लिए वैचारिक क्रांतियाँ हुई हैं। श्री टंडन ने कहा कि 'शास्त्रार्थ' इसी वैचारिक विमर्श की प्राचीन विधा है जिसके अंतर्गत वेदों, उपनिषदों, पुराणों और विभिन्न भारतीय ग्रन्थों के आधार पर किसी विषय में पर्याप्त तक–वितर्क, चिन्तन–मनन करते हुए निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

राज्यपाल ने कहा कि भारतीय दर्शन में 'मुंडे–मुंडे मनिर्भिन्ना' की उक्ति को पर्याप्त मान्यता मिली है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्र मान्यता और विचारशीलता हो सकती है –इस बात को भारतीय चिन्तन–परम्परा स्वीकार करती है। राज्यपाल ने कहा कि 'एक सत् पिप्ताः बहुधा वदन्ति' –अर्थात् एक ही सत्य को विभिन्न लोग अपनी–अपनी दृष्टि से विश्लेषित–विवेचित करते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय चिन्तन–परम्परा की मान्यता है कि –'वादे वादे जायते तत्वबोधः।' –अर्थात् विभिन्न दृष्टिकोणों और वादों के आधार पर विचार और चर्चा करने से ही तत्व–बोध की प्राप्ति संभव हो जाती है।

राज्यपाल ने कहा कि नये भारत के निर्माण का काम प्राचीन भारतीय परम्पराओं की सार्थक भाव–भूमि पर ही होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जड़ से कटकर कोई भी पेड़ वर्द्धमान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि भारत का सांस्कृतिक वृक्ष भारतीय परम्पराओं– सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहकर ही मजबूत हो सकता है।

राज्यपाल ने कहा कि भारत में –मिथिला, काशी एवं दक्षिण की पांडित्य–परंपरा अत्यन्त समृद्ध रही है। उन्होंने इन तीनों शास्त्रार्थ–परम्पराओं का सम्मिलन प्रथम बार राजभवन में होने को एक सौभाग्यशाली अवसर बताया और कहा कि नयी पीढ़ी को इस शास्त्रार्थ–परम्परा के अवलोकन से काफी प्रेरणा मिलेगी। श्री टंडन ने कहा कि नयी पीढ़ी अपनी प्राचीन सांस्कृतिक और सारस्वत विरासत पर गौरवान्वित होकर नये भारत के निर्माण में उत्साहपूर्वक जुटेगी।

आगे पृष्ठ...2 पर

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य के उपमुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में बराबर असहमतियों की गुंजाइश रही है। उन्होंने कहा कि आस्तिकता मूलकधार्मिक परंपरा के लिए विख्यात भारतवर्ष में नास्तिकता पर आधारित विचारों पर भी गौर किया गया है। उन्होंने कहा कि गैलीलियों को 'बाईबिल' के प्रतिकूल स्थापना देने पर दंडित होना पड़ा, जबकि हमारे दर्शन में परस्पर विराधी विचारों को भी सहजता से चिन्तन–मनन का विषय–वस्तु बनाकर उसका परीक्षण होता है। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में तथ्य, युक्ति, तर्क, चिन्तन सबको प्रधानता मिली है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति ने बराबर युगानुरूप अपने में परिवर्तन लाते हुए अपनी प्रासंगिकता बनाये रखी है।

कार्यक्रम में आगत अतिथियों का स्वागत एवं विषय–प्रवेश कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ सर्वनारायण झा ने किया। शास्त्रार्थ की आवश्यकता एवं इतिहास की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए प्रो० सर्वनारायण झा ने कहा कि प्राचीन काल में धर्मपरायण राजा यह जानने के लिए कि उनके राज्य में सबसे बड़ा विद्वान कौन है, शास्त्रार्थ आयोजित करते थे। राज दरबार में शास्त्रार्थ के द्वारा जो सबसे बड़े विद्वान् प्रमाणित होते थे, उनके कथनानुसार राज्य की प्रजा धर्मादि कार्य किया करते थे। जब भी कोई ऐसी स्थिति उत्पन्न होती थी कि व्रत, पर्व, त्योहार आदि के सम्बन्ध में ऋषियों/विद्वानों में मतान्तर है, तब भी राजा के द्वारा 'शास्त्रार्थ सभा' बुलाई जाती थी और शास्त्र–सम्मत निर्णय लिया जाता था। तदनुसार प्रजा धर्मादि कार्य करती थी। सबसे बड़े महत्व की बात तो यह है कि मिथिला में शास्त्रार्थ में महिलाओं का भी उतना ही बड़ा योगदान था जितना पुरूषों का। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण राजा जनक के दरबार में ऋषि याज्ञवल्क्य और गार्गी का शास्त्रार्थ एवं सहरसा के महिषी ग्राम में शंकराचार्य के साथ आचार्य मंडन मिश्र एवं उनकी धर्मपत्नी भारती का शास्त्रार्थ है।

आज आयोजित प्रथम मिथिला शैली की शास्त्रार्थ सभा में 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' विषय पर प्रो॰ शशिनाथ झा ने पूर्व पक्ष प्रस्तुत किया जबकि प्रो॰ सुरेश्वर झा ने सिद्धांत पक्ष रखा। इस शास्त्रार्थ सभा में यह तथ्य उभरकर सामने आया कि ब्रह्म सत्य है और यह संसार मिथ्या है। हम अपनी मोहान्धता और अज्ञानता में इस संसार को भी सत्य मान बैठते हैं।

दूसरी शास्त्रार्थ सभा में काशी परम्परा की शास्त्रार्थ–विधि का प्रदर्शन प्रो॰ वशिष्ठ त्रिपाठी एवं प्रो॰ राजपूजन पांडेय द्वारा ''व्याप्तिलक्ष्णम्' विषय पर किया गया, जिसके अंतर्गत यह विश्लेषित किया गया कि व्याधि के आधार पर ही न्याय तक पहुँच बन पाती है। धुम्र (धुँआ) के आधार पर ही अग्नि का अनुमान होता है। कारण–कार्य संबंध होना अनिवार्य है। चार तरह के प्रमाणों –प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द के आधार पर ही स्वाभाविक संबंध बनता है और न्याय तक पहुँच हो पाती है।

तीसरी दाक्षिणात्य शास्त्रार्थ परम्परा के अंतर्गत प्रो॰ श्रीपाद सुब्रह्मण्यम् ने पूर्व पक्ष रखा, जबकि प्रो॰ पी॰आर॰वासुदेवन ने सिद्धांत पक्ष रखा। इसके अंतर्गत वैषम्यनैघृण्याधिकरण' विषय पर दोनों शस्त्रार्थियों द्वारा अपने–अपने विचार रखे गए। इसके अंतर्गत यह विश्लेषित किया गया कि ईश्वर ही वैषम्य का सृजन करता है। वह समभावी नहीं है, इसीलिए किसी को राजा तो किसी को रंक बनाता है। यह विषमता समत्व दृष्टि के अभाव के कारण होती है। किन्तु विद्वान अंततः इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वस्तुतः ऐसा मनुष्यों के अपने कर्मों के फल की बदौलत होता है।

आगे पृष्ठ...3 पर

कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन प्रतिकुलपति प्रो॰ सी॰पी॰ सिंह द्वारा किया गया। प्रथम शास्त्रार्थ सभा में डॉ॰ गणेश्वर झा, द्वितीय में डॉ॰ महेश झा एवं तृतीय में डॉ॰ प्रियव्रत मिश्र ने हिन्दी में सारांश प्रस्तुति की। समारोह में महामहिम राज्यपाल ने विश्वविद्यालय पंचांगम् का विमोचन भी किया।

महामहिम राज्यपाल ने इस 'राष्ट्रीय शास्त्रार्थ सभा' में –प्रो॰ शशिनाथ झा, प्रो॰ सुरेश्वर झा, प्रो॰ वशिष्ठ त्रिपाठी, प्रो॰ राजपूजन पाण्डेय, प्रो॰ श्रीपाद सुब्रह्मण्यम् एवं प्रो॰ पी॰आर॰ वासुदेवन को अंगवस्त्रम् एवं स्मृति–चिह्न प्रदान कर सम्मानित भी किया। कार्यक्रम में विधान परिषद्के कार्यकारी सभापति मो॰ हारूण रशीद, बिहार के लोकायुक्त अध्यक्ष श्री श्याम किशोर शर्मा, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री विवेक कुमार सिंह सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, प्रतिकुलपति, न्यायाधीशगण, जनप्रतिनिधिगण, अधिषद्–अभिषद् के सदस्यगण, बुद्धिजीवीगण, गणमान्य जन आदि उपस्थित थे।

.....